International Journal in Management and Social Science
Volume 11 Issue 04, April 2023 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमाओं का शिल्प शास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 प्रदीप सिंह

विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, टी0डी0 पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

देवी की उपासना मानव सभ्यता के आरम्भिक युग से ही होने लगी थी क्योंकि आरम्भिक अवस्था में मनुष्य प्रजनन के रहस्य को नहीं समझता था। वह प्रजनन में सामर्थ्य नारी में मातृ शक्ति की कल्पना करता था। मानव की इसी भावना ने आदि काल में शक्ति का रूप ले लिया। मातृशक्ति की उपासना भारत वर्ष में चौथी सहस्त्राब्दी ई०पू० से ही प्रचलित थी। हड़प्पा सभ्यता में मातृ देवी की पूजा प्रचलित थी, कालान्तर में वैदिक युग में मातृ शक्ति की उपासना में महत्वपूर्ण उत्थान हुआ। उत्तर वैदिक कालीन ग्रन्थों में उमा, अम्बिका, दुर्गा, काली आदि नामों का उल्लेख किया गया है जो शाक्त धर्म से सम्बन्धित है।

प्रतिमा शास्त्रीय आधार पर दुर्गा को अनेक रूपों में प्रदर्शित करने का विधान निश्चित किया गया है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में दुर्गा को आठ भुजाओं वाली सिंह पर आसीन वर्णित किया गया है। उनके हाथों में वाण, शूल, खड्ग, चक्र, चन्द्रबिम्ब, कपाल रहता है।[1] कला में दुर्गा का चित्रण कब से प्रारम्भ हुआ, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता किन्तु गुप्त काल तक आते–आते दुर्गा का समीकरण शिव की पत्नी पार्वती से किया जाने लगा। गुप्त काल के बाद भी दुर्गा की प्रतिमाएं निर्मित होती रही। विहार से मध्यकालीन दुर्गा की विविध मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। दुर्गा की ज्ञात प्राप्त प्रतिमाओं में महिषासुर मर्दिनी स्वरूप सर्वाधिक प्रचलित रहा। आज भी इस स्वरूप की प्रतिमा देश के सर्वाधिक हिस्से में इनकी पूजा प्रचलित है।

देवी ने जब महिषासुर नामक राक्षस का वध किया तो उसके इस रूप को महिषासुर मर्दिनी कहा गया। देवी माहात्म्मा, मत्स्यपुराण और रूपमण्डन में देवी के इस रूप को कात्यायनी कहा गया है। इसका विस्तृत विवरण देवी माहात्म्य में मिलता है। इस विवरण के अनुसार राक्षसों का नेता महिषासुर देवताओं को पराजित कर इन्द्र, वायु, यम, वरूण, अग्नि और चन्द्रमा आदि के अधिकारों को स्वयं भोग रहा था। सभी देवता परेशान थे। वह स्वर्ग पर कब्जा कर लिया तब पराजित देवताओं ने ब्रह्मा, विष्णु और शिव से अपनी रक्षा हेतु प्रार्थना की जिसे सुनकर विष्णु, शिव आदि अतीव क्रोधित हुए और उनके मुख से अपूर्व तेज प्रस्फुटित हुआ अन्य देवताओं के शरीर से भी अपूर्व तेज निकले, वह सब तेज एकत्र होकर एक नारी रूप में परिणित हो गया। इस नारी रूप को देखकर देवतागण अति प्रसन्न हुए एवं सबने अपने उत्तम शास्त्रास्त्रों से उस देवी को समलंकृत किया[2] और महिषासुर के संत्रास का वर्णन कर उसके विनाश की प्रार्थना की। देवताओं की प्रार्थना से द्रवित दुर्गा ने अपार सेना सहित महिषासुर का विनाश कर स्वर्ण को ही नहीं त्रैलोक्य को भी निष्कंटक कर दिया।[3] इस प्रकार देवी का महिषासुर से युद्ध का विवरण अन्य पुराणों से भी थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ प्राप्त होता है।[4] देवी के इस रूप को एक विशेष प्रकार का अवतार कहा जा सकता है, जिसे एक निश्चित प्रयोजन के लिए धारण किया था। इस रूप में देवी को महिषासुर के साथ युद्ध करते

हुए प्रदर्शित किया जाता है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में देवी के इस रूप को चण्डी कहा गया है। इसके अनुसार देवी का वर्ण स्वर्ण के समान भासमान होता है, उसके तीन नेत्र होते हैं, वह एक युवती के रूप में प्रदर्शित की जाती है, वे क्रोषित मुद्रा में सिंह पर आरूढ़ रहती है। उनका कटि प्रदेश पतला, नेत्र विशाल तथा सुन्दर सुस्पष्ट स्तन होते हैं, उनकी गर्दन सुन्दर तथा बीस भुजाएँ होती हैं।[5] उनकी दाहिनी भुजाओं में शूल, तलवार, शंख, चक्र, वाण, शक्ति, वज्र, डमरू, छत्र तथा एक हाथ अभय मुद्रा में रहता है और बॉए हाथ में नाग पाश, खेटक, कुठार, अंकुश, धनुष, घण्टा, ध्वज, गदा, दर्पण तथा मुद्गल रहता है।[6] देवी के सामने असुर का महिष भाग कटा पड़ा रहता है और वास्तविक असुर उसकी गर्दन से निकलता हुआ प्रदर्शित किया जाता है, देवी अपना त्रिशूल उसकी गर्दन में चुभोये रहती है और सिंह उसे काटता रहता है, असुर के गर्दन से रक्त की धारा निकलती रहती है, असुर नाग पाश में बँधा रहता है और उसके हाथों में ढाल तथा तलवार रहता है।[7] अग्निपुराण में विविध आयुधों से युक्त दस भुजी सिंहवाहिनी चण्डिका द्वारा शूल से महिषासुर के वध का उल्लेख किया गया है।[8] इस पुराण में देवी के अट्ठारह और बीस हाथों का भी उल्लेख हुआ है। मत्स्यपुराण[9] में जटाजूट और अर्द्धचन्द्र से युक्त दस भुजी और त्रिनेत्री कात्यायनी को सभी आभूषणों से सुशोभित नवयौवना के रूप में त्रिभंग मुद्रा में, सिंह पर आरूढ वर्णित किया गया है। उनके दाहिने हाथ में त्रिशूल, खड़ग, चक्र, वाण, शक्ति, और बॉएँ हाथ में धनुष, खेटक, पाश, अंकुश, घण्टा, या परशु होता है उसके नीचे, हाथ में तलवार और ढाल लिये हुये महिषासुर को दिखाया जाता है, जिसके वक्षस्थल में देवी का त्रिशूल धंसा रहता है उसकी आँखें, बाल और भौहें लाल होती हैं और उसके मुख से रक्त का फव्वारा निकलता रहता है। असुर नागपाश से बँधा होता है। देवी का दाहिना पैर सिंह की पीठ पर और बॉए पैर का अंगूठा महिष के ऊपर स्थित प्रदर्शित होता है, रूपमण्डन में मत्स्यपुराण के विवरण को ही स्वीकार किया गया है। इसके अनुसार देवी के शरीर का वर्ण अतसी पुष्प के समान होता है तथा उसका स्तन उन्नत और कटि क्षीण होता है, उनके दाहिने हाथों में त्रिशूल, खड्ग, शक्ति, चक्र, धनुष तथा बॉए हाथों में पाश, अंकुश, खेटक, परशु तथा घण्टी रहती है। देवी का दाहिना पैर सिंह की पीठ पर तथा बाँया पैर महिष के शरीर को स्पर्श करता हुआ दिखाया जाता है।[10] राजस्थान के उदयपुर जनपद से प्राप्त 491 ई० के छोटी सदरी अभिलेख में दुर्गा को सिंह से जुते हुए रथ पर आरूढ़ होकर भाले से असुर के वध करने का वर्णन किया गया है।[11] महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा का निर्माण प्रथम शती ई०पू० अथवा प्रथम शती ई० से ही प्रारम्भ हो गया था। महिषासुर मर्दिनी का प्रारम्भिक निदर्शन राजस्थान के टोंक जनपद में उनियार के समीप नागर से प्राप्त एक मृण्मूर्ति में मिलता है, जो अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है। कलाविदों ने इसका समय प्रथम शती ई०पू० अथवा प्रथम शती ई० का आरम्भ निश्चित किया है।[12] कुषाण काल की अन्य अनेक महिषासुर मर्दिनी प्रतिमाएं मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है[13] जिसमें देवी के चार या छः हाथ प्रदर्शित किये गये है। गुप्त काल की भीटा से प्राप्त महिषासुर मर्दिनी प्रतिमा में दो हाथ प्रदर्शित किया गया है, देवी महिषासुर से युद्ध करती हुयी प्रदर्शित की गयी है।[14] मध्य प्रदेश के भिल्सा से चन्द्रगुप्त द्वितीय की उदयगिरि गुफा से प्राप्त प्रतिमा में देवी महिष– दैत्य से संघर्ष करती हुयी दिखायी गयी है।[15] यद्यपि कि चित्रण काफी खण्डित है फिर भी देवी की

चार भुजाएँ, जिनमें विविध आयुध स्पष्ट है। इस प्रतिमा में देवी के वाहन सिंह को प्रदर्शित नहीं किया गया है, इसमें देवी के एक हाथ में महिष की पूँछ और दूसरे हाथ में महिष पर प्रहार करते हुए भाला प्रदर्शित किया गया है। भूमरा से प्राप्त प्रतिमा[16] में भी देवी को ठीक इसी रूप में दिखाया गया है, इस प्रतिमा में देवी के चार हाथ हैं। मध्यकाल तक आते–आते महिषासुर मर्दिनी के स्वरूप में कुछ नये तत्वों का समावेश होने लगा। देवी को सिंहवाहिनी दिखाया जाने लगा तथा महिषासुर का चित्रण विभिन्न प्रकार से किया गया है, कहीं पर शरीर महिष का और मस्तक मनुष्य का और कहीं पर मानव शरीर के साथ महिष मस्तक दिखाया गया एलोरा की महिषासुर मर्दिनी प्रतिमा में देवी की आठ भुजाएँ प्रदर्शित की गयी है, देवी सिंह पर आरूढ़ है, मानव रूप में महिषासुर प्रदर्शित है किन्तु उनके सिर पर सींग को दिखाकर महिष का बोध करा दिया गया है तथा उनके साथ अन्य राक्षस भी प्रदर्शित हैं।[17] राव महोदय ने एलौरा से प्राप्त पाषाण निर्मित एक महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा का उल्लेख किया है[18], जिसमें दस भुजाओं वाली देवी महिष के स्कन्ध पर त्रिशूल चुभोये हुए हैं, देवी क्रोध की मुद्रा में है और पास में पड़े हुए कटे महिष से निकलता हुआ राक्षस क्रूर दृष्टि से देवी की ओर देख रहा है, देवी का सिंह राक्षस को नोंच रहा है। छठीं सातवीं शता० ई० के दक्षिण भारत के ऐहोल से प्राप्त प्रतिमा[19] में आठ भुजाएँ हैं और यहाँ पर राक्षस को महिष के रूप में प्रदर्शित किया गया है, उनका वध देवी भाले से कर रही हैं, देवी के पार्श्व में सिंह है। आठवीं शती ई० की चम्पा से प्राप्त काँस्य प्रतिमा[20] में देवी की चार भुजाएँ प्रदर्शित की गयी हैं, देवी के एक हाथ में तलवार और दूसरे में घण्टा है, तीसरे में महिष की पूँछ और चौथे हाथ में भाला है। उड़ीसा में हरिहरपुर से प्राप्त प्रतिमा[21] में देवी के समीप खड़ा सिंह भी राक्षस पर आक्रमण करता हुआ प्रदर्शित किया गया है, राक्षस अपना महिष रूप त्यागकर मानव रूप में प्रकट हो रहा है, जिसका वध देवी भाले से कर रही है। खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर में उत्तर पूर्व की ओर की भित्ति पर महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा है,[22] जिसमे देवी के समीप महिष कटा हुआ पड़ा है, देवी की मुख मुद्रा क्रुद्ध है, उसके समीप उसका वाहन सिंह है। वादामी से प्राप्त महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा[23] में देवी का त्रिशूल महिषासुर के गले में धंसा है, और एक हाथ से देवी महिष की पूँछ पकड़े हुए है। महाबलीपुरम् के महिषासुर मर्दिनी गुफा में उत्कीर्ण प्रतिमा में देवी और महिषासुर के युद्ध के दृश्य को विस्तृत रूप से उत्कीर्ण किया गया है।[24] इस प्रतिमा में अपने समस्त आयुधों से युक्त अष्टभुजी देवी को सिंह पर आरूढ़ अपने गणों और योगिनियों के साथ प्रदर्शित किया गया है। असुर का शरीर मनुष्य का और मस्तक महिष का है, वह अपने दोनों हाथों से गदा को पकड़े हुए है, श्री जीतेन्द्र नाथ बनर्जी ने पेशावर से प्राप्त एक महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा का उल्लेख किया है।[25] जिसमें देवी की आकृति स्पष्ट नहीं है किन्तु देवी का मुख और शरीर का ऊपरी भाग, उनके पैर तथा पशु की आकृति स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्मगत उत्कण्ठा से अनुप्राणित भारतीय समाज एवं संस्कृति में शाक्त पूजा का विशेष महत्व था। शिल्पकारों ने माँ दुर्गा की महिषासुर मर्दिनी प्रतिमाओं के

निर्माण को अपने हाथ में लेकर उसे जन–जन तक पहुँचाया। प्राचीन भारत में देवी पूजा अति प्राचीन काल से ही होने लगी थी।

सन्दर्भ :–

1. विष्णुधर्मोत्तर पुराण, पृ० 115, 117, 119
2. मार्कण्डेय पुराण, 73, 4०–42।
3. देवी महात्म्य, 2, 6, 31
4. देवी भागवत, 5, 2०, मार्कण्डेय पुराण 11, 55, मत्स्य पु०, 152, 17, ब्रहमाण्ड पुराण, 4, 29, 75
5. निगद्यते हाथो चण्डी हेमाभासा सुरूपिणी।
   त्रिनेत्रा यौवनास्था च क्रुद्धा चौहर्वस्थितामता।।
   कृशमध्या विशालाक्षी चारूपीन पयोधरा।
   एकवक्त्रां तु सुग्रीवा वाहुर्विशाति संयुता।।

   (वि०ध० पु०, 117, 18–20)
6. शूलासिगचक्राणि वाणशक्तिपवीनपि।
   अभयंडमरू चौव छत्रिकां दक्षिणे करे।
   उर्ध्वादि क्रमयोगेन विभ्रती सा सदा शुभा।
   नागं पाशं तथा खेटं कुठाराङकशकार्मुकम्।
   घण्टाध्वजगदादर्श मुर्दगर वाम एवं च।।

   (वि०ध० पु०, 117, 20–22)
7. तदधो महिषश्छिन्न मूर्धा पतित मस्तक।
   शस्त्रोद्यत करस्स्तब्धस्तद्ग्रीवा संभवः पुमान।।
   शूलभिन्नो बमद्रक्तो रक्तभ्रूमूघजेक्षणः
   सिंहेन खाद्यमानश्च पाशवद्धो गलेभभृशम्।।
   याम्याङग्राकान्तासिंहा च सत्याड़ घ्रपालीठगासुरे।
   चण्डी चौद्यतशस्त्रेयं चाशेषरिपु नाशिनी।।

   (वि०ध० पु०, 117, 22–25)
8. अग्नि पु०, 52, 16,
9. मत्स्य पु०, 249, 55–65
10. रूप म० 55, 18–20
11. एपिग्रेफिया इण्डिका, भाग 30, पृ० 120
12. वी०एस० श्रीवास्तव, कैटलॉग एण्ड गाइड टू दी गंगा गोल्डेन जुबली म्यूजियम, बीकानेर 1961, पृ० 3
13. जर्नल ऑफ यू०पी० हिस्टारिकल सोसाइटी, खण्ड 22, पृ० 158–159
14. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट, 1911–12, पृ० 86 फलक 31, चित्र सं० 14, दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 498

15. डी०आर, पाटिल, दी मानुमेन्ट ऑफ दी उदयगिरि हिल, पृ० 35, दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 499. फलक 41, पृ० 4
16. मेंम्वामर्स ऑफ दि आर्कियोलॉजिकल लॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, भाग 15, पृ० 13, फलक संख्या 14 बी.
17. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 499.
18. एलीमेन्ट्स ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, भाग एक, खण्ड 2, पृ० 345
19. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 499, फलक 42 चित्र–3.
20. वही, पृ० 498
21. वही, पृ० 499, फलक 42 चित्र 2
22. यू०, अग्रवाल, खजुराहो स्कल्पचर एण्ड देयर सिगनीफिकेन्स, पृ० 62–63, चित्र सं० 43
23. एस०के० सरस्वती, ए सर्वे ऑफ इण्डियन स्कल्पचर्स, पृ० 142
24. सी० शिवराममूर्ति, इण्डियन स्कल्पचर, पृ० 73, ओ०सी० गांगुली, दी आर्ट ऑफ दी पल्लव, पृ० 19
25. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 500, फलक 42, चित्र संख्या 1